प्राकृतिक संरक्षण

यदि नहीं जाना इकोलोजी,

तो क्या रहेगी इकोनोमी ?

बिना प्राकृतिक संरक्षण

उद्धार कहां मानवमौजी ?

बिन सोचे खेत जला दे,

वो है अनपढ़ किसान ।

कम्पोस्ट बनाए कांटों से,

वोही सच्चा किसान बच्चा ।

वोही सच्चा भूमि पुत्र

जो करे दरकार भूमि मात की,

और करे ह्यूमस अप्ररंपार ।

भूसंपदा के संरक्षण में,

करें जीवन अर्पण सच्चा किसान,

पाकर ही "ह्युमस" अपरंपार,

करें देश को न्याल किसान ।

जो सूक्ष्म है, वोही तो विराट्,

वट पीपल की मिट्टी से मौज ।

तो पीपल-वट-तुलसी लगाएं आज,

ग्लोबल वार्मिंग के समरांगण में ।

चहुं दिंसे वन्यसंपदा विनाश,

भूमि मात करे चित्कार ।

रोक सको प्राकृतिक विनाश,

वोही सच्चा औद्योगिक विकास ।

झहरीला इन्सान छिड़के
झहरीली दवाई,
मारे मित्र कीटकों को
घर घर दे केन्सर केन्सर ।
वृक्ष कहे मुझे जलाओ आज
मै तुम्हें जलाऊँगा कल,
दावानल के रौद्र स्वरुपे
धरती पर मै नाचूँ आज ।
वृक्ष वृक्ष है कल्पवृक्ष
वृक्ष वृक्ष वृन्दावन ।
हर पत्ता पत्ता पुरुषोत्तम
वृक्ष ही विष्णु अवतार ।
पथ पथ पे वृक्ष छाँव
अंतिम चीता में, वृक्ष ही साथ ।
पंखियों की चहचहाट सुनने,
वृक्ष लगाएँ, वृक्ष संवारे ।
गौमाता कहे, सुनलों आज
हमने परौन्से सबको दूध
भूख से तरसते मेरे बाल,
न किया मोल इन्सानो ने
काट खाये गौवंश के बाल,
पाप कर्मो के फल तुम्हारे
मिलेंगे तुमको अपरंपार ।
गोबर धन है देन हमारी
करे धरा अति समृद्ध,
जीवामृत है जीवन का अमृत
किसान का वो दोस्त है सच्चा ।
तंबाकू के व्यसनी आप
लगाया मुझे भी रासायनिक व्यसन,
मुझको भी बनाया पत्थर
ये पत्थर दिल इंसान ने आज ।

जल कहता है जानों आज
अस्सी प्रतिशत मैं भूभाग,
उतना ही मानव देह मे
उतना ही खेत खलिहानों में,
तो जल ही है जीवन अपना
जीना है तो कर जतन मेरा
सुन पगले, दे मेरी बात पे ध्यान ।
टपके नहीं एक भी नल
तो जीवन भी बहे, जैसे जल
और रहे सुखी घर संसार ।
सुनामी मेरा रौद्र स्वरूप
चहु ओर करे विनाश,
तो करो अब प्राकृतिक दरकार ।
जो दीसे वो अपरा प्रकृति
दसों दीशा लहेराए,
ना दीसे वो परा प्रकृति
ईश्वर वो कहेलाए,
जतन करो अपरा प्रकृति का
और पहुंचे परा ईश्वर धाम ।

विश्वात्मा
ग्लोबेलियन
डो. चैतन्य पटेल

(प्राकृतिक संरक्षण से ग्लोबल वोर्मिंग को मात देने का तरीका यहाँ कविता में दर्शाया गया है ।)